International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.alleducationjournal.com
Volume 1; Issue 4; April 2016; Page No. 81-83

महीप सिंह की कहानियों में प्रेमानुभूति

नीलम

रिसर्च विद्वान, लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, फागवारा, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

साहित्य जीवन का दर्पण है और जीवन विभिन्न घटनाओं, घात-प्रतिघातों एवं ऊहा-पोहों का समुच्य है। की इन विविधताओं के दो रूप हैं - बहिरंग और अतरंग। बहिरंग में मनुष्य सृष्टि के विभिन्न पदार्थो और प्राणियों के सम्पर्क में बहुत कुछ सीखता और समझता है किन्तु उसके ये समस्त अनुभव, उसके अंतरंग में सिथ्त पूर्ण आनन्द की कामना को तृप्त नहीं कर पाते। मनुष्य जो कुछ है - उससे कहीं अधिक होना चाहता है। उसे जो कुछ प्राप्त है, वह अपूर्ण है। अतः पूर्णत्व का अनुसन्धान मनुष्य का चरम लक्ष्य है। अन्तरंग की यह पूर्णत्व-लालसा बहिरंग की अपूर्णता से नित्य प्रति टकराकर मनुष्य को असन्तुष्ट, क्षुब्ध तथा सदा कार्यशील बनाए रखती है। इस प्रकार मानव जीवन में मानसिक स्तर पर यथार्थ और सुखेच्छा के बीच जो संघर्ष होता है, साहित्य उसी संघर्ष शमन का उपचार करता है। मानव-जीवन के अंतरंग की गहराइयो का विश्लेषण करने में साहित्य का सच्चा सहायक है- मनोविज्ञान। मनोविज्ञान यह बताता है कि सत्य केवल वह नहीं है जो हमें बाहर दिखाई देता है, उससे भी प्रबल और चरम सत्य भीतरी है, जिसका उद्घाटन करना आवश्यक है। वस्तुतः 'मनोविज्ञान अंतिम विश्लेषण में 'जीवन' शब्द का पर्यायवाची हो जाता है, क्योंकि जिसे हम जीवन कहते हैं, वह अधिकांश रूप से हमारे मनोजगत् की सूक्ष्मता की ही वस्तु है। अतः मनोविज्ञान साहित्य को प्रभावित करे तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।''[१]

मानव की मनोवृतियाँ दो विरोधी वर्गों में विभाजित हैं, जिनमें से प्रथम वर्ग जीवन-वृति का है और दूसरा मरण-वृति का। फ्रायड के मतानुसार मानव के अंतर्मन में प्रेम और घृणा, सक्रियता और उदासीनता तथा आसक्ति और विरक्ति की विरोधिनी वृतियों का विलक्षण ध्रुवत्व रहता है। मानव-मन के अनेक असंगत, अस्वाभाविक अथवा चमत्कारिक प्रतीत होने वाले व्यपारों का रहस्य इस ध्रुवत्व सिद्धांत में निहित है।''[२]

मानव-मन के चेतन और अचेतन की मध्यवर्ती अवस्था के तीन सोपान हैं- (१) केवल स्वत्व (इद) (२) स्वत्व (ईगो) और उपरिस्वत्व (सुपरईगो)।

मन का वह स्तर, जहाँ मनुष्य की प्रारंभिक उमंगे, प्रेरणाएँ और प्रबल इच्छाएँ निवास करती हैं। केवल स्वत्व अथवा प्रकृत स्वत्व कहलाता है। बाह्य जीवन के अनुभव से धीरे-धीरे विकसित होने वाले मानसिक स्तर को स्वत्व (ईगो) कहते हैं। मनुष्य का यही मानसिक स्तर अर्थात् स्वत्व (ईगो) मन के प्रकृत या 'केवल स्वत्व' (इद) के अनियंत्रत आग्रहों एवं प्रवृतियों को परिस्थिति के अनुसार नियंत्रित करता है। 'केवल स्वत्व' (सुपर ईगो) है, जो व्यक्ति का समाजीकरण करने वाली, नैतिकता की मूल प्रेरणाशक्ति है। इसकी उत्पति प्रकृत स्वत्व के बाद होती है और यह मानव के सभी प्रकार के आदर्शों का विधायक है।[३]

इन चार प्रमुख सिद्धांतों के अतिरिक्त फ्रायड ने विभिन्न मानसिक कार्यपद्धतियों का विशदतः विश्लेषण किया है, जिसे उन्होंने 'मनोव्यापार' की संबा दी है। मुख्य मनोव्यापार हैं- उदात्तीकरण, आरोपण, तादत्मीकरण, निर्देशन-विस्थापन, स्थानन्तीकरण, बद्धत्व-प्रत्यावर्तन, स्वपन, युक्ति और सम्मोहन।[४] विचार के क्षेत्र में भौतिक-बौद्धिक मूल्यों की अधिक विश्वसनीय तथा रोचक ढंग से स्थापना की गई... काव्यशील्प पर भी फ्रायड का प्रभाव कम नहीं पड़ा। उनकी 'मुक्त संबंध' शैली को तो कथाकारों ने सीधा ही अपना लिया। साथ ही स्वप्नचित्रों के सृजन और उद्घाटन का भी हमारे साहित्य में बड़े वेग के साथ प्रचार हुआ।'[५]

महीप सिंह के साहित्य में उपरोक्त मनोवैज्ञानिक संदर्भ नारी-चेतना में अवतरित हुए हैं। नारी-चेतना को प्रभावित करते इन मनोवैज्ञानिक संदर्भों को निम्न शीर्षकों में विभाजित कर सुगमता से स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

फ्रायड का मत है कि कुछ मानसिक प्रवृतियां अथवा अग्राहृय होती हैं। मनुष्य उन्हें दबाने का प्रयास करता है। चेतन मन द्वारा किया गया मानसिक प्रवृतियों का यह 'निषेध' निरोध कहलाता है। कई बार ऐसा निषेध अचेतन मन द्वारा भी होता है, जिसे 'दमन' कहा जाता है। दोनों प्रकार के इस निषेध में अंतर यह है कि 'निरोध' चेतन मन' द्वारा ज्ञात रूप से होता है, किंतु 'दमन' अचेतन मन द्वारा अज्ञात रूप से।

महीप सिंह के साहित्य में चितवृतियों के निरोध के एक दो उदाहरण ही उपलब्ध हैं। 'धूप की उंगलियों के निशान' में नीता 'निरोध' शक्ति के बल पर ही विवाह-विच्छेद के बाद सारा जीवन पुरूष संसर्ग के बिना गुजार देती है। संबंध विच्छेद के सात साल बाद अचानक नीता को उसका पति एक बस स्टॉप पर मिल जाता है। वे दोनों एक-दूसरे को पहचानकर भी कुछ देर नहीं बोलते, फिर पहल नीता के पति ने की और कहा-नीता कैसी हो। इसके बाद वे दोनों बस में एक ही सीट पर बैठ गए और रास्ते में बहुत सी बातें करते हुए नीता के फ्लैट पर रूक सकते हैं। वह नीता के फ्लैट में रात को रूकने के लिए मान गया। इसके बाद सोने का समय हुआ तो स्वाभाविक है कि नीता सात साल से पुरूष संसर्ग से दूर है और आज उसके अचेतन मन में यौन तृप्ति की चाह जागृत हो गई। इस स्वाभाविक यौन तृप्ति की इच्छा और चेतन मन की 'निरोध-प्रवृति' को निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है-

''ड्राइंगरूम के दीवान पर ही नीता ने उसका बिस्तर लगा दिया। बीच की मेज़ पर पानी का जग और गिलास रख दिया था। जब तक टैलिवीजन चलता रहा, दोनें देखते रहे और बिना बोले बातचीत करते रहे। फिर टैलिविजन की उद्घोषिका ने कहा - हमें कल शाम छह बजे तक इजाजत दीजिए। 'अच्छा, अब आप आराम कीजिए।' कहकर नीता अपने कमरे की ओर जाते हुए बोली - 'मैं सुबह सात बजे निकल जाती

हूं। आप बाद में निकलना चाहें तो ताला बंद करके चाबी पड़ोस में दे दीजिएगा।''[६]

यहां पर नीता का सात साल से संबंध विच्छेद हुए पति के साथ बस में एक सीट पर सटकर बैठना, उसे अपने फ्लैट पर लेकर आना, फिर अकेली होने के बावजूद उसे रात को वहीं सोने के लिए आग्रह करना, देर रात तक इकट्ठे बैठकर टैलिविजन देखना आदि उसके अचेतन मन में यौन तृप्ति की इच्छा को जाहिर कर रहा है। परंतु न जाने एकदम अचानक उसका दूसरे कमरे में चले जाना जागृत यौन भावना का निषेध है। वस्तुतः यह निषेध चेतन मन की 'निरोध-प्रवृति के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।

'लिबिडो' को फ्रायड ने मानव मन तथा व्यक्तित्व परिचालित करने वाली मूल शक्ति कहा है। इसे 'कामूलक' तथा 'स्वार्थमूलक' ग्रंथि का पर्याय माना जा सकता है। समाज की नैतिक धारणाओं से मेल न खाने पर भी यही शक्ति मानव जीवन की मूल परिचालिका है। फ्रायड ने बालक और बालिका की 'लिबिडो' नामक मनोग्रंथि के दो भिन्न-भिन्न नाम दिये हैं- -इंडिप्स' और इलैक्ट्रा'। उसके मतानुसार दो वर्ष की अवस्था के पश्चात् बालक या बालिका की 'लिबिडो' क्रमशः माता या पिता की ओर उन्मुख होने लगती है। धीरे-धीरे इसका केन्द्र कोई विशिष्ट विपरीत-लिंगी हो जाता है। कुछ बड़ा होने पर जब उन्हें ज्ञात होता है कि यह भावना समाज द्वारा निंदनीय है तो अचेतन मन द्वारा अज्ञात रूप से इस वृति का दमन हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें ग्रंथि उत्पन्न होती है। आगे चलकर यह ग्रंथि उनके पूरे जीवन को प्रभावित करती है।

महीप सिंह के साहित्य में बहुत सी नारियों का जीवन 'लिबिडो' अर्थात् 'काममूलक ग्रंथि द्वारा परिचालित दिखाई देता है। 'यह भी नहीं' उपन्यास की शांता में 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि इतनी प्रबल हो जाती है कि वह उसके प्रवाह को रोक नहीं पाती। शांता जिस कोचिंग कॉलेज में पढ़ रही होती है, उसी कॉलेज के अंग्रेजी पढ़ाने वाले नौजवान प्राध्यापक सोहन की ओर आकर्षित होती है। यहां 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि का आवेग शांता को यह भी सोचने नहीं देता कि वह उसे ही पढ़ाने वाले को अपना देहार्पण करने के लिये तैयार है। एक दिन वह सोहन के साथ रात लेट शों देखकर, राजपथ पर चले गये और वहां देर रात तक घास के मैदानों पर घूमते रहे। सोहन डर रहा था, लेकिन शांता उसके साथ बेधड़क घूम रही थी। इसके बाद शांता का अंदर का आवेग सोहन को खींचकर सुनसान जंगल में ले जाता हैं शांता 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि के प्रबल प्रवाह में कैसे बहती चली जा रही थी, इसका लेखक ने उपन्यास में इस प्रकार उद्घाटन किया है-

''उस रात वह कितनी बेचैन थी ... लगता था...एक आग सी में जल रही थी... वह बार-बार सोहन को दबोच लेती थी और सोहन था कि उसका अंग-अंग कांप रहा था। उस रात वह कितनी उत्तेजित थी! लगता था कहीं से एक पहाड़ी नदी उसके अंदर उमड़ आई है ... जैसे वह सारे किनारे... सारे बंधन तोड़ती चली जा रही है।[७]

शांता के अंदर 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि का तेज़ प्रवाह उसे घर से भागकर सोहन

के साथ प्रेम-विवाह करने पर मजबूर करता है। इसके बाद सोहन भी शांता की तीव्र यौन अतृप्ति को तृप्त करने में असमर्थ हो जाता है। इसलिए शांता की 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि उसे जीत, खोसला, दर्शन, विकास, राय और प्रीतम लाल के सहवास की ओर प्रवृत करती है।

'बाद की बात' में रोमा अपने साथ रेडियो स्टेशन में काम करने वाले बलबीर की तरफ आकर्षित होती है और उससे विवाह पूर्व ही यौन संबंध बना लेती है, जिसका कारण 'लिबिडो' ग्रंथि है। रोमा और बलबीर के रोमांस की चर्चा सारे स्टूडियों में खुलेआम होती हैं, लेकिन उसके अंदर 'इलेक्ट्रा' ग्रंथि का इतना तेज़ प्रवाह है कि वह इन बातों की कोई चिंत नहीं करने देता। इसके बाद रोमा का आकर्षण बिंदु अविनाश नाम का पत्रकार बनता है, क्योंकि बलबीर की कहीं दूसरे स्थान पर बदली हो गयी थी और रोमा को अपनी तृप्ति के लिए किसी न किसी का सहवास जरूरी था। 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि के कारण ही रोमा कार चलाते-चलाते अविनाश से लिपट जाती है और कार रूक जाती, उसकी बत्तियां बुझ जाती-

''दोनों वापस मुड़ते तो अंधेरा हो चुका होता। कार रिंग रोड या रिज रोड जैसी सुनसान सड़कों पर दौड़ती-दौड़ती कहीं भी रूक जाती। बत्तियां बुझ जाती और कार में बैठी दो आकृतियां एक-दूसरे में सिमट जाती, कार फिर आगे चलती। फिर किसी मोड़ पर अंधेरे में रूक जाती, फिर बत्तियां बुझ जाती। फिर दोनों आकृतियां एक-दूसरे में सिमट जाती।''[८]

यहां रोमा ऐसी युवती है जिसे 'इलैक्ट्रा' ग्रंथि ही विवाहपूर्व दो-दो पुरूषों

के संसर्ग के लिए विवश करती है। 'सीधी रेखाओं का वृत' की सबी भी 'इलैक्ट्रा ग्रंथि के कारण शादी-शुदा पुरूष मिनि की तरफ ही आकर्षित हो जाती है। वे दोनों एक कॉलेज में प्राध्यापक हैं। सवी में 'इलेक्ट्रा' ग्रंथि के कारण वासना का इतना तेज प्रचंड है कि वह अपने साथ प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के सामने मिनि से मिलने, उससे बातचीत करने आदि में कोई संकोच नहीं करती, जबकि मिनि उसके इस प्रकार के व्यवहार से कई बार घबरा जाता है और कहता कि और सब को छोड़ा, क्या तुम्हें अपनी नौकरी की भी परवाह नहीं है। इसके बाद उन दोनों की बातचीत होती है-

''मैं अपनी नौकरी की परवाह नहीं करती'' वह काफी तुनककर बोली थी।

''बस तुम्हारा यही पागलपन तो मुझे अच्छा नहीं लगता। जब तुम्हें इसका दौरा पड़ता है, तुम अच्छे बुरे का विचार छोड़ देती हो।''[९]

सवी का पागलपन और कुछ नहीं, बल्कि इलैक्ट्रा ग्रंथि ही है, जो अपने

तेज प्रवाह में सब कुछ को बहा ले जाना चाहती है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, मानव-मन में स्वप्रेम के साथ पर-प्रेम, रचनात्मक प्रवृति के साथ विनाशात्मक प्रवृति अथवा जीवनेच्छा के साथ मरणेच्छा का अद्भुत ध्रूवत्व दिखाई देता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत इन्हें क्रमशः जीवन प्रवृति (इरोज़) और मरण-प्रवृति (थांटोस) का नाम दिया गया है। जीवन प्रवृति से परिचालित होकर मनुष्य विभिन्न लैंगिक आचरण करने लगता है। जबकि मरण प्रवृति के प्रभाववश विभिन्न विनाशत्मक कार्यों में प्रवृत होता है। उल्लेखनीय यह है कि ये दोनों प्रवृतियां एक साथ मानव में उपस्थित रहकर उसके व्यक्तित्व में यदा-कदा संघर्ष उत्पन्न कर देती है। शायद यही कारण है कि एक प्रेम करने वाला जहां अपनी प्रेयसी के साथ प्रेम से परिपूर्ण व्यवहार करता है, ऐसा करते समय चाहे उसे खुद विकट स्थिति का सामना क्यों न करना पड़े, वहीं प्रेमिका के साथ वह कभी-कभी कठोर व्यवहार करने में ही तृप्ति का अनुभव करता है। प्रेमी के पहले आचरण को फ्रायड ने 'आत्मपीड़न' और दूसरे को पर-पीड़न-रति' कहा है।

व्यावहारिक जीवन में इन वृतियों के विचित्र उदाहरण अनेक बार सामने आते हैं। एक ही व्यक्ति के चरित्र में प्रेम और घृणा, दया और क्रूरता, सहानुभूति और ईर्ष्या तथा जिजीविषा और मरणेच्छा का अद्‌भुत संगम दिखाई देता है।[१०]

मनुष्य के चेतन और अचेतन मन का संघर्ष कई बार विकट रूप ले लेता है कि मनुष्य असाधारण व्यवहार करने लगता है। ऐसी स्थिति मे गतिमान दिखाई देने वाली असाधारण चित्तवृतियों में सबसे प्रमुख 'चित्तविकृति' (न्यूरोसिस) है, जो प्रायः स्वत्व-विभाजन के कारण उत्पन्न होती है। विकृत्तचित व्यक्ति का चेतन मन अपने नैतिक आदर्शों को थामे रहता है, जबकि अचेतन मन अनैतिक वासनाओं के पीछे भागता है।[११]

निष्कर्ष

'चित्त-विकृति' से अगली स्थिति 'चित्त-विक्षप्ति की है। अचेतन में पड़ी हुई वासनाएं कई बार इतनी प्रबल हो जाती है कि मनुष्य अनजाने में ही विक्षिप्ति का सा व्यवहार करने लगता है। उसका मस्तिष्क चेतना-शून्य सा होकर उचितानुचित से सर्वथा निरपेक्ष कुछ-का-कुछ कह या कर बैठता है। महीप सिंह की कहानियां प्रेम की सभी स्थितियों पर खरी उतरती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. डॉ० देवराज उपाध्याय, आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान, पृ० ६।
२. ब्राउन, साइको डाइनेमिक्स आफ अबनार्मल बिहेवियर, पृ० १५८।
३. जैस्टो, फ्रायड - हिज ड्रीम एण्ड सैक्स थ्योरीज, पृ० ८८।
४. डेवर ए डिक्शनरी आफ साइकालोजी, पृ० १६३।
५. डॉ० नगेन्द्र, 'विचार और विश्लेषण' में निबंध 'फ्रायड और हिंदी साहित्य' पृ० ६३-६४।
६. महीप सिंह, धूप की उंगलियों के निशान, संबंधों का सन्नाटा, पृ० १२७।
७. महीप सिंह, यह भी नहीं, पृ० १६।
८. महीप सिंह, बाद की बात, क्षणों का संकट, पृ० २२८।
९. महीप सिंह, सीधी रेखाओं का वृत, क्षणों का संकट, पृ० २१०।
१०. ब्राउन साइको डाइनेमिक्स ऑफ अब्नार्मल बिहेवियर, पृ० १५६।
११. जुंग, टू ऐस्सेज आन अनेलिटिकल साइकालोजी, पृ० १६।